दिनांक–19.02.2025

B.A.PART - III HONS. (Philosophy)

प्रश्न 1. वैदिक नैतिक दर्शन की विवेचना करें।

उत्तर–भारतीय नीतिशास्त्र की जड़ें वैदिक साहित्य में है जो संसार की प्राचीनतम दार्शनिक साहित्य है। वैदिक साहित्य को चार अंगों में बाँटा गया है–(i) मंत्र या संहिता, (ii) ब्राह्मण, (iii) आरण्यक और (iv) उपनिषद्।

मंत्र या संहिता के चार भाग हैं–ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद और यजुर्वेद। मंत्र या संहिताओं में अनेक सामाजिक और तत्त्वमीमांसीय विषयों पर विचार किया गया है। ब्राह्मण कर्मकांड हैं। आरण्यक और उपनिषद् इस दृश्य जगत के आधार के विषय में विचार करते हैं।

वैदिक साहित्य में ईश्वर की अवधारणा का केन्द्रीय स्थान है; पर वेद के ईश्वर की अवधारणा अन्य दर्शन तथा धर्मों की अवधारणाओं से भिन्न है। यहाँ अनेक देवताओं की कल्पना की गई है पर वे सभी एक ही केन्द्रीय तत्त्व के व्यक्त रूप हैं। उस मौलिक तत्त्व को सत्यम् सत्य, केन्द्रस्य केन्द्र कहा गया है। वैदिक साहित्य में ऋत की अवधारणा की कल्पना की गई है। सृष्टि के आधारभूत सिद्धान्त को ऋत या नीतिपरायणता कहा गया है।

ऋत की अवधारणा का नीतिशास्त्र में बहुत महत्त्व है। यह वास्तव में कर्म सिद्धान्त की पूर्वछाया है। ऋत सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है। अतः वैदिक दृष्टिकोण के अनुसार विश्व में नैतिक व्यवस्था है। अन्याय वा अव्यवस्था क्षणिक और अस्थायी हैं।

ऋत की अवधारणा से नैतिकता के मापदण्ड का बोध होता है। यह सभी पदार्थों का सर्वव्यापी सार है। यह सत्य है। अतः अव्यवस्था या अनऋत असत्य है। वैसे व्यक्ति जो ऋत या सत्य के पथ पर चलते हैं शुभ हैं। व्यवस्थित आचरण अनुव्रत कहलाता है। अच्छे व्यक्तियों के, जो ऋत के पथ पर चलते हैं, जीवन पद्धति को व्रतानी कहा जाता है। अनऋत का राह प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध है अतः मृत्यु और रोगों की ओर ले जाता है।

व्यवस्थित आचरण उसे कहा गया है जिसमें संगति हो। शुभ जीवन का मुख्य लक्षण है संगत आचरण। संगत आचरण उसी का होगा जो तर्कबुद्धि से काम ले। अतः विवेकपूर्ण जीवन ही शुभ जीवन है। वासनामय जीवन आवेगपूर्ण होता है। अतः इसमें असंगति होती है। ऐसा जीवन अशुभ जीवन है। इसीलिए वैदिक दृष्टिकोण से विवेक का शुभ जीवन में सर्वोच्च स्थान है। अच्छा व्यक्ति अपनी जीवन पद्धति को परिवर्तित नहीं करता। अतः उसे धृतव्रत (जो अपने को न बदले) कहा जाता है।

डॉ. श्रवण कुमार मोदी
सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग
शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय
बारा चकिया,पूर्वी चम्पारण
मो0–9608685335
Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com